om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:04 Page 6

समकानीन गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी, दादी जी से आशीर्वाद लेते हुए।

राजस्थान के राज्यपाल डा.एम.चन्नारेडी दादी जी को डाक्टरेक्ट डिग्री से सम्मानित करते हुए।

तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी का शाल ओढ़कर अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

यू.पी.ए.अध्यक्षा सोनिया गांधी के माउण्ट आबू प्रवास अभिवादन करते हुए दादीजी।

समस्त मानवजाति... 14 वर्ष की उम्र में ही आध्यात्मिक पथ पर अपने को अग्रसित कर दिया था। उनके जीवन में रुकावटें और बाधाओं के पहाड़ आए, पर वे हिमालय की तरह अडिग अपने साधना पथ पर आगे बढ़ती रहीं। कहते हैं हिमालय कभी किसी झंझावात की परवाह नहीं करता। जैसे जंगल का स्वामी एक ही सिंह होता है वैसे ही सिंह की भांति कांटो रुपी जंगल की स्वामिनी दादी जी ने समस्त मानव जाति में आध्यात्मिकता की अलख जगाई।

आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन एक चमत्कार होता है। उनका जन्म तो एक साधारण मनुष्य की तरह ही होता है, पर जीते हैं वह एक असाधारण मनुष्य की तरह। जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है, किन्तु जिस जीवन से देश और समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी-किसी में होता है।

भारतीय संस्कृति का प्राण आध्यात्मिकता।

इन्हीं आध्यात्मिक परंपराओं को चरितार्थ किया है दादीजी ने। जिनके कुशल नेतृत्व में संघ व समाज में नए चरण पड़े हैं। जिनके शासन प्रभाव के अनगिनत कार्य संपन्न हो रहे हैं। जिनके उदात्त, महान आदर्श से समस्त मानव जाति गौरवान्वित हो रही है, जिन्हें पाकर हम धन्य हुए। उनका जन्म सिन्ध प्रांत में हुआ। केवल 14 वर्ष की आयु में वे प्रजापिता ब्रह्मा के सम्पर्क में आईं और उन्होंने अपना जीवन विश्व के मानव के उत्थान के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने जीवन-पर्यन्त स्थूल-सूक्ष्म से हर क्षण को विश्व सेवा अर्थ व्यतीत किया। दादीजी के सम्पर्क में चाहे किसी को एक पल या एक घण्टा या कुछ दिन रहने का अवसर मिला, वे क्षण उनके जीवन भर के लिए यादगार बन गए। दादीजी की दृष्टि, उनका यज्ञ के प्रति समर्पण भाव व विश्वकल्याण का कार्य उन्हें आजीवन प्रेरित करती रहेंगी।

चाहे कोई किसी भी मजहब, जाति-पाति या लिंग का हो, दादीजी हरेक की खूबियों को भी जानती थीं और उन्हें रुहानियत की खुशबू से भर देती थीं। उनमें उमंग-उत्साह का संचार हो जाता था, वे सदा के लिए यज्ञ-रक्षक बन कार्य करने को प्रेरित हो जाते थे। जो भी दादी के साथ एक पल भी बिता पाता, वह उनसे कुछ न कुछ ज़रूर सीखता। हमारे दिलो-दिमाग से दादी जी की याद को निकाला नहीं जा सकता परन्तु उनके स्मृति दिवस पर केवल उनको प्यार से यादकर आँसू बहाना या भावुक हो जाना, क्या इससे दादी जी खुश होंगी? या फिर दादी जी के गुणों को और कर्तव्यों को, उनकी उम्मीदों और आशाओं को, उनके रहे हुए अधूरे वृहद कार्य को हमारे द्वारा पूर्ण होते हुए देखकर खुश होंगी?

इस बार हम उनका सातवां अव्यक्त दिवस मना रहे हैं, तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। अपने को शान्ति की गहराई में ले जाकर अ-पनी अंतरात्मा को टटोलने की यह घड़ी है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुबान थकती नहीं है। तो क्या उनकी विशेषताओं को मैंने भी अपने जीवन में धारण किया है? अगर हाँ, तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी स्मृतियां याद होंगी। दादी जी की याद में हम प्रकाश स्तम्भ के आगे जाकर मौन खड़े रहते हैं। उस समय दादी और उनके द्वारा मिली हुई सर्व शिक्षाएं, फिल्म रील की तरह एक-एक कर अन्तर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं और हमारी यादों के बगीचे के फूलों को नई सुन्दरता और खुशबू से भर देती हैं। उस चित्र फीती का पहला चित्र सामने आता है और दादी जी, हम आप जैसी एक आम व्यक्ति के रूप में दिखती हैं।

दादी जी - असामान्यता में सामान्यता

जब इन्सान महान बनता है तो कभी-कभी अपनी निजी मानवता को छोड़ देता है परंतु दादी जी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर के इन्सानी जज़्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम दे-खते हैं तो इन्सानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी के इस बेहद निजी पहलू पर हमारी नज़र शायद न गई हो, लेकिन इस बात पर अगर हम गौर करें तो दिखता है कि कैसे दादी जी हरेक छोटे-बड़े साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थीं। सर्दी हो या बारिश, हर आने वाले छोटे-बड़े व्यक्ति के गर्म कपड़े या बरसाती का ध्यान दादी जी रखती थीं। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाती थीं।यज्ञ में कोई बीमार हो या अस्पताल में कोई भी पेशेन्ट हो, दादी जी ने स्वयं मिलकर या किसी को भेजकर हमेशा उनका ख्याल रखा है। किसी पर भी उनके किसी निर्णय से अन्याय न हो इस बात का दादी जी ने सदा ध्यान रखा है। दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई बाहर का श्रमिक सेवाधारी, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ती थी, ऐसे कोने में चुपचाप खड़े व्यक्ति पर दादी जी की नज़र पड़ती थी और खास उस व्यक्ति का ख्याल रखती थीं। मतलब कि दादी जी के इन्सानी जज़्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा है।

दादी जी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाली निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। किसी से भी कोई नई बात सीखने और समझने में उनको कभी भारी नहीं लगता था। उम्र से इतनी बड़ी होने के बावजूद अभी-अभी आई हुई कुमारियों को सखीपन का अनुभव वह बड़ी ही सहजता से करा देती थीं। मुरली को पढ़कर ऐसा आत्मसात कर लेती थीं कि जब वे सुनाती थीं तो सुनने वालों को भी वह स्वत: आत्मसात हो जाती थी। 70 वर्ष से नियमित ज्ञानयोग की पढ़ाई करते रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनके उत्साह व लगन को किसी नये विद्यार्थी की तरह ही तरोताज़ा देखा गया।

और हाँ, किसी की नज़र तीक्ष्ण हो तो उनके अंदर छिपे हुए इनोसेन्ट बच्चे को उसने अवश्य देखा होगा। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना उनकी आकर्षक छवि में चार चाँद लगाता था। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र आस-पास की हवाओं पर इतनी रुहानी खुशबू फैला देती थी कि दूर कोने में बैठा व्यक्ति भी महसूस करता कि वह कहीं आसपास ही हैं।

हरेक के अंदर छिपे हुए गुणों को परखकर उनके उस गुण या कला को बाबा की सेवाओं में लगाने की कला को केवल उन्हीं से सीखा जा सकता है। वे न केवल उस व्यक्ति के गुण और कला की परख करती थीं बल्कि कद्र भी करती थीं और समय पर सबके सामने उसका वर्णन भी करती थीं। जीवन के अंतिम दिनों में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वह मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं, लेकिन उनकी नज़रों में हमें पहचानने के चिन्ह अवश्य दिखाई देते थे। उस समय भी उनकी एक दृष्टि को पाने के लिए हज़ारों लोग शान्ति और धैर्यता से लम्बी कतार में खड़े रहते थे। दादी जी ने अंतिम श्वास तक अपना हर पल बाबा की सेवा में बिताया। आज भी उनकी ही सेवाओं का मीठा फल हम सब खा रहे हैं। ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। उनके जीवन और जज़्बे को हमारा शत् शत् प्रणाम श्रद्धांजली।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम का अभिवादन करते हुए दादी प्रकाशमणि।

प्रसिद्ध समाजसेवी मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि।

दक्षिण आफ्रिका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडु को ईश्वरीय सौगात के रूप स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि।

स्वामी गंगाधर को शाल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए दादी प्रकाशमणि।